International Journal in Management and Social Science
Volume 10 Issue 11, November 2022 ISSN: 2321-1784 Impact Factor: 7.088
Journal Homepage: http://ijmr.net.in, Email: irjmss@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal

काकभुसुंडी और गरुड़ (उपसाना घाट) के बीच संवाद का अध्ययन

Shiv Prakash[1], Dr. Rajesh kumar[2]

[1]Research Scholar, Sunrise University, Alwar, Rajasthan
[2]Research Supervisor, Sunrise University, Alwar, Rajasthan

सारांश

इस पवित्र शास्त्र पर आधारित कई राजनीतिक, सामाजिक, घरेलू, धार्मिक और नैतिक विचार और भावनाएँ यथार्थवादी, वैचारिक हैं और आज के संदर्भ में भी सही रास्ता दिखाती हैं। इस संबंध में न केवल हिन्दी में बल्कि अन्य भाषाओं में भी किसी बुद्धिजीवी विशेष पर अधिक शोध कार्य नहीं हुआ है। तुलसी दास की रचनाओं पर अकेले लगभग आधा हजार या उससे अधिक शोध किए गए हैं। इनमें से कुछ महत्वपूर्ण कार्य हैं- तुलसी और गुप्तजी की राम भावना (अशोक कुमार सिंह), संस्कृत राम का ा या की परंपरा में राम वर्ण मानस (पूनम कुमारी), तुलसी साहित्य के संरक्षक की दृष्टि में श्री राम (शशि प्रसाद सिंह), तुलसी साहित्य के नित्योपदेश का कथामूलक अनुशीलन (श्री सुमन महाराज), तुलसी और सुर की भक्ति भावना का तुलानात्मक अध्ययन (वाल्मीकि शर्मा), राम चरित मानस में भक्ति रस एक अनुशीलन(राम चरण एक चौधरी), कबीर और तुलसी की भक्ति भवन का तुलन (दिनेश रे), तुलसी का नीति काव्य (राम जनक रे), तुलसी काव्य में नीति तत्व (हुजूर फाल्मा रिजवी), तुलसी साहित्य पर धार्मिक प्रभाव (चंद्र कुमारी), तुलसी काव्य में धर्म और आचरन का स्वरूप (चरण सखी शर्मा), आदि

मुख्यशब्द: तुलसी काव्य, यथार्थवादी, बुद्धिजीवी, राम भावना, राजनीतिक

प्रस्तावना

उपासना घाट की अवधारणा

उपासना घाट में जीव नवादा भक्ति का सहारा लेता है। इसमें कार्य-संस्कृति (कर्म) का अस्तित्व है लेकिन यह ईश्वर की कृपा से ही संभव है। इस प्रकार, यह अध्याय (कांड) प्रणालीगत भक्ति (वैधि भक्ति) के नियम की स्थापना करता है, जहां भक्त, अपनी भक्ति के माध्यम से अपने मानसिक विकास (अभ्युदय) और शाब्दिक मामलों (निहश्रेयश) से वैराग्य का रास्ता साफ करता है। भक्ति के नौ अलग-अलग तरीकों (नवधा भक्ति) का उपयोग करते हुए, उसके लिए कुछ भी असंभव नहीं है। वह वांछित मृत्यु की शक्ति भी प्राप्त कर सकता है।

संवादों का विवरण

प्रस्तुत अध्याय में उपासना घाट पर काकभुसुण्डी और गरुड़ के बीच कुल मिलाकर अठारह संवाद हैं। इन संवादों को थीसिस के अंत में परिशिष्ट शीर्षक के तहत सूचीबद्ध किया गया है। इन संवादों का विवरण आगामी पंक्तियों में दिया जा रहा है:

काकभुसुंडी और गरुड़ के बीच संवाद (एकल संवाद)

काकभुसुंदी और गरुड़ के बीच यह संवाद उस समय का है जब इंद्र के पुत्र जयंत ने कौवे के वेश में भगवान राम की शक्ति का परीक्षण करने के लिए जानकी के पैरों को अपनी चोंच से चोट पहुंचाई और भाग गए। जानकी के पैरों से निकल रहे रक्त को देखकर भगवान राम धनुष पर बाण के रूप में एक छड़ी रखते हैं। मंत्र द्वारा तैयार किया गया यह तीर जयंत का पीछा करता है और उसे बचाने की हिम्मत किसी में नहीं होती। इस घटना का वर्णन करते हुए काकभुसुंडी कहते हैं:

काहुँ बैठन कहा न ओही। राखि को सकई राम कर द्रोही॥
नातु मृत्यु पितु समन समाना। सुधा होइ बिस सुनु हरिजाना॥ (1)

काकबुसुंडी का कहना है कि भगवान राम के शत्रुओं के मित्र भी उनके साथ शत्रुओं की तरह व्यवहार करने लगते हैं। गंगा नदी, जिसे मोक्ष देने वाली माना जाता है, यमपुरी की नदी बन जाती है और यह दुनिया उन्हें जलन का एहसास कराती है। उपरोक्त संवाद से यह स्पष्ट हो जाता है कि भगवान राम के शत्रु को हर कोई और हर जगह त्याग देता है। इससे हमें यह भी सीख मिलती है कि हमें एक बहादुर व्यक्ति के साथ अपने सामर्थ्य के अनुसार व्यवहार करना चाहिए। नहीं तो हमारा भी हाल जयंत जैसा होगा।

काकभुसुंडी और गुरुरा के बीच संवाद (एकल संवाद)

निम्नलिखित संवाद उस समय का है जब पंचवटी, सूर्पनखा में। भगवान राम और लक्ष्मण दोनों भाइयों के आकर्षक व्यक्तित्व को देखकर उनमें वासना की भावना विकसित होने लगती है। सूर्पनखा की इस बेचैनी को देखकर काकभुसुंडी कहते हैं:

भ्राता पिता पुत्र उरगारी। पुरुष मनोहर निरखत नारी॥
होइ बिकल सक मनहि न रोकी। जिमि रबिमनि द्रब रबिहि बिलोकी॥
(2)

दिए गए संवाद में, काकभुसुंडी सूर्पनखा के राक्षसी चरित्र को उजागर करती है। इसमें सबसे पहले वह एक महिला हैं और उससे भी ऊपर उन्हें एक राक्षस का शरीर और दिल मिला है। इस प्रकार, यह दयनीय संयोजन,

सभी सीमाओं को पार करते हुए, उसे किसी भी पुरुष को अपनी वासना को संतुष्ट करने के लिए माध्यम बनाने के लिए उकसाता है।

काकभुसुंडी और गुरुरा के बीच संवाद (एकल संवाद)

निम्नलिखित संवाद उस समय का है जब रावण एक ऋषि के वेश में सीता का हरण करने के लिए भय के भाव से उनकी कुटिया के पास आता है। रावण की इस डरी हुई स्थिति को देखकर काकभुसुंडी कहते हैं कि रावण जो स्वयं देवताओं के भय और नींद का कारण था, अब सीता के प्रति अपनी गलत भावनाओं के कारण डर गया है।

सो दससीस स्वान की नाईं। इत उत चितइ चला भड़िहाईं॥
इमि कुपंथ पग देत खगेसा। रह न तेज तन बुधि बल लेसा॥ (3)

उपरोक्त संवाद से, यह हमारे ज्ञान में आता है कि किसी ने भी गलत रास्ते पर एक कदम भी जल्दी नहीं उठाया; उसकी शक्ति, शक्ति और ज्ञान, सब कमजोर हो जाते हैं। यही स्थिति रावण की थी जब वह सीता का हरण करने जा रहा था। चोर की तरह इधर-उधर की सावधानीपूर्वक जाँच करना। यहां रावण लंका के एक शक्तिशाली राजा का आभास देने के बजाय एक साधारण चोर की तरह दिख रहा है।

काकभुसुंडी और गरुड़ के बीच संवाद (एकल संवाद)

निम्नलिखित संवाद उस समय का है जब भगवान राम के विनम्र निवेदन के बाद भी समुद्र उनके सामने नहीं आया। फिर, जब तीन दिन बीत गए, तो भगवान राम ने क्रोधित होकर अपने धनुष पर एक बाण रख दिया। इस पर समुद्र में मौजूद सभी जीव भयभीत और भयभीत हो गए। तब समुद्र एक ब्राह्मण के रूप में भगवान राम के सामने एक खेदजनक आकृति की तरह प्रकट होता है। समुद्र की इस स्थिति को देखकर काकभुसुंडी गरुड़ से कहते हैं:

काटेहिं पइ कदरी फरइ कोटि जतन कोउ सींच।
बिनय न मान खगेस सुनु डाटेहिं पइ नव नीच॥ (4)

इस संवाद से यह स्पष्ट हो जाता है कि विनम्र अनुरोध (सथे सत्यम समचारेत) से दुष्ट व्यक्ति को सुधारा नहीं जा सकता। इस प्रकार, हम कह सकते हैं कि एक चालाक व्यक्ति के साथ चालाकी का व्यवहार किया जा सकता है। राम ने समुद्र के खिलाफ भी यही नीति अपनाई थी।

काकभुसुंडी और गरुड़ के बीच संवाद (एकल संवाद)

निम्नलिखित संवाद उस समय होता है जब लंका की जीत और सीता के बचाव के बाद, भगवान राम सीता और लक्ष्मण के साथ सुरुचिपूर्ण तरीके से बैठे हैं। इस समय सभी देवता आकर उनसे प्रार्थना कर रहे हैं। इसी क्रम में

देवराज इंद्र भी आते हैं और भगवान राम की पूजा करते हैं। फिर, वह उसके प्रति अपने लिए एक उपयुक्त सेवा माँगता है। इस पर। भगवान राम ने उन्हें युद्ध में राक्षसों द्वारा मारे गए सभी वानरों को जीवन देने का आदेश दिया। इंद्र, मन्ना ओस (अमृत-वृष्टि) की मदद से इस काम को पूरा करते हैं। इस दृश्य को देखकर काकबुसुंडी गरुड़ से कहते हैं:

सुनु खगेस प्रभु कै यह बानी। अति अगाध जानहिं मुनि ग्यानी॥
प्रभु सक त्रिभुअन मारि जियाई। केवल सक्रहि दीन्हि बड़ाई॥(5)

दिए गए संवाद में, हम भगवान राम के मर्यादा पुरुषोत्तम चरित्र को देखते हैं। भगवान राम, जो स्वयं पूरी सृष्टि के स्वामी हैं और जिनकी इच्छा पर, सभी प्राणियों के जीवन और मृत्यु का फैसला किया जाता है, वे इंद्र के सम्मान को बनाए रखने के लिए, जो कि देवताओं के राजा हैं, उन्हें जीवन देने के लिए कहते हैं। वानरों को। इस पूरी क्रिया में इंद्र को भी प्रसन्नता होती है कि उन्हें भी भगवान राम की सेवा करने का अवसर मिला।

भगवान राम के प्रवर सभी चार वेदों (विविध संवाद)

निम्नलिखित संवाद वेदों द्वारा प्रार्थना के रूप में उस समय प्रस्तुत किया गया है जब भगवान राम का राज्याभिषेक हो चुका है और सभी देवता भगवान राम की प्रार्थना करके दरबार छोड़ चुके हैं। उसके बाद चारों वेद भगवान राम के पास आते हैं और उनकी स्तुति करते हैं।

अवतार नर संसार भार बिभंजि दारुन दुख दहे।
जय प्रनतपाल दयाल प्रभु संजुक्त सक्ति नमामहे॥(6)

इस प्रकार चारों वेद भगवान राम की शक्ति, वीरता और महिमा का वर्णन करते हुए भगवान राम की दिव्य शक्ति की महिमा गाते हैं। वे, भगवान के भौतिक (सगुण) और गैर-भौतिक (निर्गुण) रूप की प्रशंसा करते हुए, उनके चरणों के प्रति प्रेम का वरदान मांगते हैं।

करुनायतन प्रभु सदगुनाकर देव यह बर मागहीं।
मन बचन कर्म बिकार तजि तव चरन हम अनुरागहीं॥(7)

चारों वेदों द्वारा की गई प्रार्थना भगवान राम की दिव्य शक्ति की स्वीकृति है। इस सत्य को जानने और पहचानने के बाद, वे भगवान राम की भक्ति और उनके चरणों में आशीर्वाद के लिए प्रार्थना करते हैं।

भगवान राम की प्रार्थना बीवी भगवान शिव (विविध संवाद) वेदों के प्रवचन के बाद, भगवान शिव भगवान राम के सामने प्रकट होते हैं और भगवान राम को बहुत खुश और स्नेही तरीके से प्रार्थना करना शुरू करते हैं।

जय राम रमा रमनं समनं। भवताप भयाकुल पाहि जनं॥
अवधेस सुरेस रमेस बिभो। सरनागत मागत पाहि प्रभो॥(8)

इस प्रार्थना में भगवान शिव ने रावण के वध की घटना, राम के विशिष्ट रूप को कामदेव का अभिमान तोड़ने वाला बताते हुए, और भगवान राम के तपस्वी आध्यात्मिक रूप को याद करते हुए, जो किसी भी सांसारिक वासना से मुक्त हैं, भगवान शिव भक्ति और साथ की कामना करते हैं। भगवान राम के चरण और कहते हैं:

बार -बार बर मागउँ हरषि देहु श्री रंग।
पद सरोज अनपायनी भगति सदा सतसंग॥(9)

इस प्रार्थना में, हालांकि भगवान शिव भगवान राम की बहादुरी और आकर्षक रूप की प्रशंसा करते हैं, वे अपने शिष्यों को भगवान राम के स्नेही और मोक्ष देने वाले चरित्र का भी वर्णन करते हैं और भगवान राम के चरणों में उनकी चिरस्थायी भक्ति की कामना करते हैं, यह प्रार्थना दिखाती है भगवान राम के प्रति भगवान शिव की महान भक्ति

काकभुसुंडी और गरुड़ के बीच संवाद (एकल संवाद)

निम्नलिखित संवाद उस समय होता है जब भगवान शिव भगवान राम से प्रार्थना करने के बाद कैलाश के लिए प्रस्थान करते हैं। इस पवित्र दृश्य का वर्णन करते हुए काकभुसुंडी गरुड़ से कहते हैं:

सुनु खगपति यह कथा पावनी। त्रिबिध ताप भव भय दावनी॥
महाराज कर सुभ अभिषेका। सुनत लहहि नर बिरति बिबेका॥(10)

इसका अर्थ है कि भगवान राम के राज्याभिषेक की कथा सुनने से प्राणियों में ज्ञान (ज्ञ आना) और वैराग्य (वैरागी ए) की भावना विकसित होती है। यह कथा भौतिक (दैहिक), आध्यात्मिक (दैविक), सांसारिक (भौतिक) - तीनों प्रकार की चिंताओं को नष्ट कर देती है और इस प्रकार यह जन्म और मृत्यु चक्र के भय को मिटा देती है। इस संवाद में, भगवान राम (राम कथा) की कहानी की विशिष्ट विशेषताओं पर ध्यान दिया गया है। इस कथा को सुनने के बाद मनुष्य के मन में एक विरक्ति की भावना उत्पन्न हो जाती है और इस कथा को सुनकर व्यक्ति इतना अधिक भावुक और उत्साहित हो जाता है कि वह स्वयं को भूल जाता है।

वनरगना और भगवान राम के बीच संवाद (गोष्ठी संवाद)

निम्नलिखित संवाद उस समय का है जब राज्याभिषेक समारोह के बाद भगवान राम सभी वनरगणों को अपने सामने बुलाते हैं और कहते हैं:

परम प्रीति समीप बैठारे। भगत सुखद मृद बचन उचारे।।
तुम्ह अति कीन्हि मोरि सेवकाई। मुख पर केहि बिधि करौं बड़ाई॥(11)

निष्कर्ष

राम चरित मानस का मंथन करने के बाद, यह पता चलता है कि संवादों का एक विशिष्ट पैटर्न खोजा जाता है, जहां उन संवादों की कल्पना की जाती है जो नायक, भगवान राम और उनके आसपास के अन्य महत्वपूर्ण पात्रों के चरित्र को प्रबल करते हैं। इन संवादों में पात्रों के सूक्ष्म विवरण भी प्रकाश में आते हैं। मानस में संवाद के रूप में मनुष्य ही नहीं, देवता और दानव ही नहीं, बल्कि उनसे भी बुरे चरित्रों को स्थान दिया गया है। ये संवाद पाठक के सामने शील, गुण, मर्यादा, नम्रता, उग्रता, कुटिलता, इरश्या, मोह, मद, मत्सर, विवेक और अविवेक आदि विशेषताओं को पाठकों के सामने लाते हैं। इन संवादों का व्यवहार-प्रकटीकरण एक ओर जहां प्रत्यक्ष भाषण के माध्यम से पात्रों के व्यवहार की विशेषताओं को उजागर करता है, वहीं दूसरी ओर उनके मन में चल रहे भावनात्मक द्वंद्व को भी प्रकट करता है और तर्कों की सहायता से उनके व्यवहार के रहस्यों पर प्रकाश डालिए। इस संदर्भ में मानस के नायक या नायक - भगवान राम का व्यवहार विभिन्न संवादों और विभिन्न पहलुओं और रूपों में सामने आया है। इधर, नवजन्म भगवान राम, कौशल्या और भगवान राम के बीच संवाद के माध्यम से अपना महान रूप दिखाते हैं और इसके बाद फिर से अपना नया जन्म रूप लेते हैं और बाल-लीला शुरू करते हैं। उसी प्रकार बाल रूप में काकभुशुमदी की शंकाओं को दूर करने के लिए वह उसे अपने जादू में बांधता है और फिर उसे पूरे ब्रह्मांड को दिखाता है फिर एक बार फिर से अपनी बाल-लीला शुरू करता है। भगवान राम और लक्ष्मण, भगवान राम और भरत के बीच संवाद में, एक तरफ, हम अपने भाइयों के लिए भगवान राम के गहरे प्रेम में आते हैं। वहीं दूसरी ओर, भगवान राम और दशरथ, कैकेयी और भगवान राम, कौशल्या और भगवान राम आदि के संवादों में, हम माता-पिता के प्रति प्रेम, भक्ति और आज्ञाकारिता को देखते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

मिश्रा, प्रसाद, बलदेव, डॉ. "तुलसी दर्शन"। हिन्दी साहित्य सम्मेलन। प्रयाग। 2013.

मिश्रा, विद्यानिवास, एड. "राम सरित मानस"। काशीराई ट्रस्ट के आशी: 2014।

पांडे, प्रकाश इंद्र, "अवधी लोकीत और परम्परा।" रचना प्रकाशन। इलाहाबाद। 2011.

पाठक, शि वायल, "मानस मयंक।" खड़े विलास प्रेस. बांकीपुर, संवत: 2010।

सहाय, शिवनंदन, "श्री गोस्वामी तुलसीदासजी।" बिहार स्टोर। ए आरएचए: 2013।

शुक्ला, रामचंद्र, पं. "तुलसी ग्रंथावली"। नारी प्रचारिणी सभा। काशी सैम वैट: 2011।

सिंह, नामवर, डॉ. "वाद विवाद संवाद," राय कमल प्रकाशन। नई दिल्ली, 2009।

आह, पाल, अमर। "तुलसी पूर्ब राम साहित्य।" रचना प्रकाशन। इलाहाबाद, 2008।

आह, पाल, विजय, "केशवदास।" लाख भारती प्रकाशन। इलाहाबाद : 2009

सीताराम, एल. "राम चरित मानस (अयोह्यकंद।)" किशोर ब्रदर्स। प्रयाग संवत: 2008।

त्रिपाठी, नरेश, आर एम।" तुलसीदास और उनकी कविता" हिंदी मंदिर। प्रयाग। संवत: 2005।

वर्मा, राजकुमार, डी आर।" संत तुलसीदास "राजपाल एंड संस। डी ईएलएच मैं: 2015